ऊँटों में खुजली (पाँव) के लक्षण बचाव के उपाय व निदान

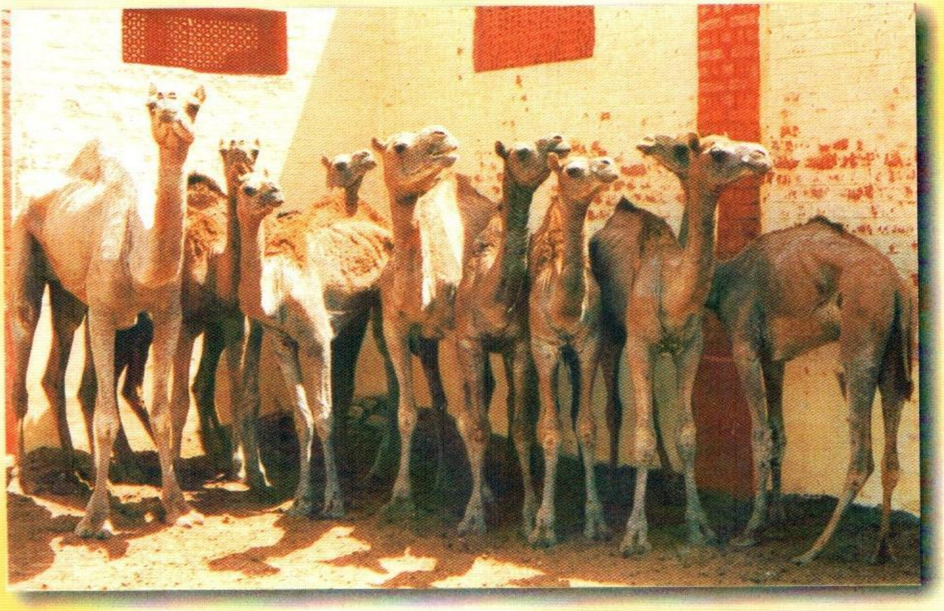

खुजली (पाँव) रोग से ग्रसित ऊँटों का टोला

भाकृअनुप
ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़, शिवबाड़ी

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

ऊँटों में खुजली (पाँव) के लक्षण बचाव के उपाय व निदान

आलेख:
डॉ. मोहन सिंह साहनी
डॉ. नरेन्द्र शर्मा
डॉ. एस.के. घूरई
डॉ. यू.के. बिस्सा
डॉ. बी.एल. चिरानियाँ

भाकृअनुप
ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिबवाड़ी
बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

प्रकाशक :
डॉ. एम. एस. साहनी
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

प्रकाशन :
नवम्बर-2003

मुद्रक :
आर.जी. एसोसिएट्स
बीकानेर
फोन : 0151-2527323

ऊँटों में खुजली (पाँव) के लक्षण बचाव के उपाय व निदान

पाँव, ऊँटों में होने वाली चमड़ी की मुख्य बीमारी है। यह रोग एक परजीवी (माईट) द्वारा होता है। ऊँटों में इस रोग का कारण सारकोप्टिक स्केबिआई वार केमिलाई है। यह छूत का रोग है तथा जानवरों से मनुष्य में भी हो सकता है। अतः यह एक अत्यन्त घातक बीमारी है, जिसकी जानकारी ऊँट पालकों के लिये अति आवश्यक है। इस रोग को पाँव, खाज, खुजली इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। यह रोग किसी भी मौसम में हो सकता है परन्तु शीत ऋतु में इस रोग के होने व फैलने की अधिक सम्भावना रहती है।

यह देखा गया है कि रोग कम स्थान में अधिक जानवर रखने, अन्य रोगों से ग्रसित कमजोर ऊँटों में व ऊँटों के रख-रखाव का उचित प्रबन्धन नहीं होने के कारण अधिक होता है तथा तेजी से फैलता है। इस रोग के सर्वेक्षण आँकड़ों को देखने से यह निष्कर्ष निकाला गया कि पाँव रोग एक स्थान से दूसरे स्थान घूमने वाले ऊँटों के झुण्डों में अधिक होता है। पाँव के होने की संभावना व प्रकोप किसानों द्वारा बांध कर रखे जाने वाले एक या दो ऊँटों पर कम होता है। सर्वेक्षण के अनुसार घूमने वाले ऊँटों के झुण्डों में इस रोग का प्रकोप 30 से 50 प्रतिशत तक देखने को मिला। व्यवस्थित प्रबन्धन वाले ऊँटों के फार्म में इस रोग के होने का प्रतिशत 23 से 43 तक पाया गया। रोग के अधिक व कम होने का कारण प्रबन्धन तकनीक व व्यवस्था पर निर्भर करता है। यह रोग वयस्क ऊँटों में छोटे ऊँटों की तुलना में अधिक होता है।

पाँव रोग के लक्षण

पाँव रोग की प्रारम्भिक स्थिति में इससे प्रभावित हिस्से मुँह, बगले व पेट के पश्च भाग के निचले हिस्सों में देखने को मिलता है। संक्रमित स्थान की चमड़ी के बाल झड़ जाते हैं व हल्की सूजन भी होती है। रोग के पुराने पड़ने पर इस रोग से ग्रसित हिस्सा आकार में फैलता है

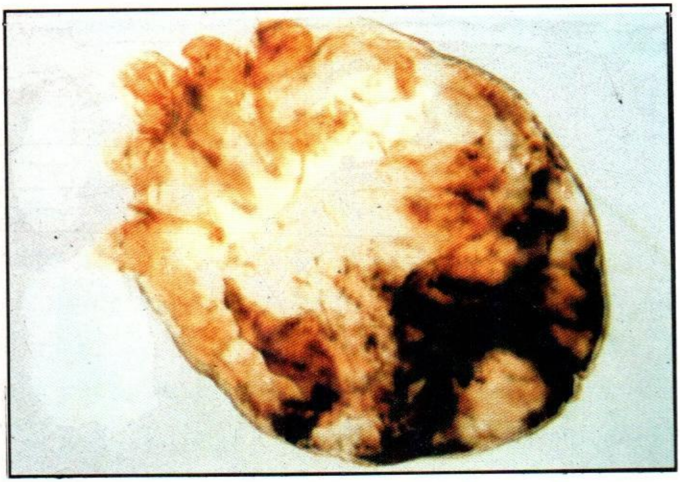

परजीवी (माईट) सारकोप्टिक स्केबिआई वार केमिलाई

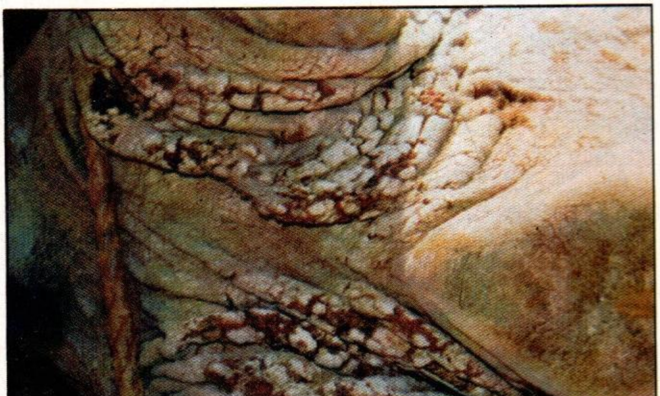

ऊँट के सीने व बगलों में माइट का तीव्र संक्रमण

व इसका प्रभाव गर्दन, सिर व पैरों पर भी देखने को मिलता है।

यह रोग जब चरम स्थिति में होता है तो चमड़ी पर बहुत तेज खुजली होने लगती है व जलन भी होती है। ऐसी स्थिति में जानवर उस हिस्से को पेड़, दीवार या अन्य चीज से रगड़ता रहता है, जिससे कई बार खून भी बहने लगता है व जानवर के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट होती

ऊँट के मुंह के चारों ओर माइट का तीव्र संक्रमण

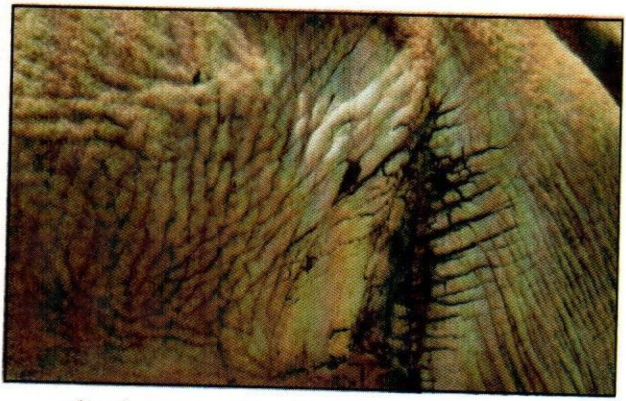

ऊँट के जननांग के चारों ओर माइट का संक्रमण

जाती है। वह कमजोर हो जाता है तथा अल्प रक्तता की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे ऊँटों की कार्यक्षमता व उत्पादन क्षमता काफी क्षीण हो जाती है।

पाँव रोग ग्रसित ऊँटों के सम्पर्क में आने वाले मनुष्यों के भी यह रोग हो जाता है। मनुष्य की अंगुलियों व हाथों-पैरों पर इसका प्रभाव देखने को मिलता है। पाँव रोग से ग्रसित ऊँट, खुजली करने के लिए जिस चीज से शरीर को रगड़ता है, उसके सम्पर्क से भी यह रोग मनुष्य में हो सकता है।

पाँव रोग के कीटाणु शरीर के अलावा बाह्य वातावरण में 7 से 14 दिन तक जिन्दा रह सकते हैं व आद्र गर्म वातावरण उनकी बढ़ोत्तरी के लिए अधिक उपयुक्त है। पाँव रोग का परजीवी (माईट) चमड़ी के ऊपरी हिस्से में अन्दर घुसकर गुफायें बना लेता है तथा वहीं पर अण्डे भी दे देता है। संक्रमित हिस्से की चमड़ी सूखी, मोटी, कठोर व सलवटयुक्त हो जाती है व खून भी रिसने या बहने लगता है। कुछ समय पश्चात् संक्रमित चमड़ी के ऊपर खरून्ट भी बन जाते हैं, जो कि तेज खुजली व जलन होने पर उस हिस्से के रगड़ने से बनते हैं।

रोग का निदान

इस रोग के परजीवी (माईट) व उसके अण्ड़ों को चमड़ी की गहरी छीलन लेने पर प्रयोगशाला में सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखा जा सकता है। यह इस रोग के जाँचने का मुख्य तरीका है। इस परजीवी का आकार 0. 2 से 0.5 मि.मी. तक होता है। इस हेतु ली गई चमड़ी की छीलन को परखनली में पानी या 10 प्रतिशत **KOH** के घोल में 2 मिनट उबाल लेना चाहिये। नीचे बैठे पदार्थ से स्लाईड बनाकर सूक्ष्मदर्शी से जाँचें।

रोग के बचाव

इस रोग के होने पर रोग से ग्रसित ऊँटों को अन्य स्वस्थ ऊँटों से तुरन्त अलग कर देना चाहिये ताकि रोग ग्रसित ऊँट स्वस्थ ऊँट के सम्पर्क में न आ सके।

- रोग ग्रसित ऊँटों को चराने के लिए भी अलग ले जाना चाहिये ताकि स्वस्थ जानवर सम्पर्क में न आ सके।
- राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में प्रबन्ध सम्बन्धी बदलाव से यह पाया गया कि ऊँटों के रोजाना खुर्रा व ब्रुश करने तथा 15 दिन या 1 माह में एक बार पानी से नहलाने से भी ऊँटों को पाँव रोग से बचाया जा सकता है।
- ऊँटों के बाड़ों में चूना व कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिये (वर्ष में कम से कम एक बार)। पाँव से ग्रसित सभी ऊँटों

का उपचार एक साथ करना चाहिये ताकि पाँव रोग दुबारा न फैल सके। ऊँटों में काम करने वाले आदमियों को अपने हाथ अच्छी तरह से (साबुन व ऐन्टीसैप्टीक घोल) धोने चाहिये।

- स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखना चाहिये। इससे रोग होने व फैलने की सम्भावना न्यूनतम हो जाती है।

पाँव रोग का उपचार

पाँव रोग से ग्रसित ऊँटों की तुरन्त पहचान कर उनका उपचार करना चाहिये, अन्यथा यह रोग तेजी से संक्रमण करता है। इस रोग के उपचार हेतु कई पूर्व प्रचलित इलाज हैं जो काफी अच्छे, सस्ते एवं लाभदायक हैं। राइकों व ऊँटपालकों में प्रचलित पाँव रोग के उपचार -

- जला हुआ इंजन का काला तेल गंधक मिलाकर लगाया जाता है।
- गैम्कसीन पाउडर 5 प्रतिशत एक भाग, 2 भाग राख, एक भाग गंधक, इन सबको तेल में मिलाकर सारे शरीर या संक्रमित हिस्से पर लगाया जाता है। इसे लगाने के उपरान्त एक दो दिन जानवरों को सीधी तेज धूप में नहीं रखना चाहिये।
- नमक युक्त कीचड मिट्टी का लेप करना चाहिये। कम से कम सप्ताह में दो बार दोहराना चाहिये।
- नीम की कच्ची कोपलों व कच्ची पत्तियों को पानी में आधे घंटे उबालकर पुनः ठण्डा कर इससे शरीर को अच्छी तरह से धोना चाहिये या छिडकाव करें।
- गंधक 50 ग्राम, नीला थोथा 50 ग्राम, मन्सिट 50 ग्राम व पोटाश 60 ग्राम लेकर इन्हें मिला लेवें व 5 किलो तेल में मिला कर शरीर पर लगावें।

यदि पाँव रोग की तीव्रता अधिक हो तो उपरोक्त दवा में आक की पत्तियों के रस को मिला कर लगा सकते हैं।

आधुनिक उपचार

कीटनाशक दवाओं का छिड़काव

1.	डेल्टा मेथ्रिन (ब्यूटॉक्स)	0.4 प्रतिशत घोल
2.	एमिट्राज (टिक टैक)	0.2 प्रतिशत घोल
3.	साइपर मेथ्रिन (क्लिनार)	0.1 प्रतिशत घोल
4.	फेनवेलरेट	0.2 प्रतिशत घोल

साधारणतया उक्त दवाओं के लगाने या दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करने से ठीक हो जाता है। रोग की तीव्रता होने पर 3 से 4 छिड़काव भी करने पड़ सकते हैं। यह दवाऐं छिड़काव करने वाले व्यक्ति पर भी विषाक्त प्रभाव डालती है। अतः-

- छिड़काव करने वाले व्यक्ति को मास्क व चश्मा और हाथों में रबर के दस्ताने पहनने चाहिये।
- उक्त दवाओं का असर हो तो एट्रोपीन सल्फेट की गोली या इंजेक्शन दिया जाता है।
- इसके अतिरिक्त एक अन्य दवा, जिसे सिर के पीछे से पूँछ के अग्र भाग तक रीढ़ की हड्डी पर 20 मि.ली./100 किलो शरीर भार के हिसाब से लगाया जाता है। इस दवा का नाम फलूमेथ्रिन 1 प्रतिशत है। यह बेतीकॉल के नाम से उपलब्ध है।
- इंजेक्शन आईवर मेक्टिन — 1 मि.ली./50 किग्रा शारीरिक भार, चमड़ी के नीचे लगावें।

इस प्रकार उपरोक्त रख-रखाव, बचाव व निदान के उपायों से ऊँटों को पाँव (खुजली) से बचाकर उत्पादन/कार्यक्षमता में गिरावट को रोका जा सकता है।

• • •

माहवार वार्षिक कार्यक्रम (उष्ट्र प्रबन्ध एवं रोगनिरोध)

जनवरी व फरवरी

- प्रजनन
- जनन
- दुग्ध पान के दौरान नवजात की विशेष देखभाल एवं प्रबन्ध
- बाह्य/अन्तःपरजीवी रोग से बचाव

मार्च व अप्रैल

- बाल कर्तन
- कीटनाशी छिड़काव
- कृमिनाशक (आवश्यकतानुरूप)
- सर्रा रोग हेतु रसोरोगनिरोध

मई व जून

- शीघ्र गर्भ जाँच
- ऊँटों के नम्बर लगाना (3 वर्ष एवं उससे ऊपर की आयु के)
- बाह्य/अन्तःपरजीवी रोग से बचाव
- पशु बाड़े की मिट्टी को पलटना व चूने तथा कीटनाशी दवाओं से उपचारित करना

जुलाई व अगस्त

- ट्रीपेनोसोमा (सर्रा) रोग की जाँच करना
- बाह्य/अन्तः परजीवी रोग से बचाव

सितम्बर व अक्टूबर

- सर्रा रोग से बचाव हेतु रसा रोगनिरोध
- कृमिनाशक दवा देना
- बाह्य परजीवी/त्वचा संक्रमण हेतु कीटनाशी दवा का छिड़काव
- गर्भित मादाओं को विटामिन 'ए' संपूरक
- ऊँट के बच्चों को माँ से अलग करना

नवम्बर व दिसम्बर

- प्रजनन में उपयोग लिये जाने वाले नर ऊँटों को विटामिन 'ए' व सांद्र संपूरक
- कीटनाशी दवाओं का छिड़काव (आवश्यंकतानुरूप)
- प्रजनन
- गर्भित मादाओं की विशेष देखभाल व संपूरक नवजात की देखभाल